** अध्याय नं.2 **

– धूमिल के काव्य की अवधारणा –

कविने अपने साहित्य की रचना कैसे की ?

धूमिल के विचार उनकी कविता में बडें सहज भाव से उतरते हैं। प्रश्न यह है कि धूमिल स्वयं कविता के बारें में क्या सोचते थे। इसके दो कारण है। एक तो यही की धूमिल की कविता को कई लोग कई प्रकार के दूषणों से लादते रहे हैं। कोई कहता है कि उसकी कविता असम्बध्द विचारों की अभिव्यक्ति का नमुना है। कोई कहता हैं, उनकी कविता अश्लील है, भदेस है। कोई कहता हैं, उसकी कविता रहस्यवादी कविता दूरुह है तो कोई कहता हैं, उसकी कविता में आत्मगत कुठांओ–व्यथाओं की प्रक्रिया है। इस बारेमें स्वयं धूमिल की कविता के संबंध में क्या–क्या, कैसी–कैसी धारणाएँ थी। बल्कि सच्चाई तो यह होती हैं कि, साहित्यिक विद्याओं के लक्षणों, गुणों आदि की चर्चा करना आलोचकों का काम माना जाता हैं।

छायावादी काव्य की प्रतिष्ठा और प्रतिष्ठापना में स्वयं छायावादी कवियों ने भी अपनी कविता की लंबी–लंबी भूमिकाएँ लिखी है। इसी परंपरा में धूमिल का वह वक्तव्य भी आ जाता हैं, जो उन्होंने अपनी कविता के संदर्भ में दिया है। उसमें कवि प्रायः उन सभी तत्वों की चर्चा संक्षिप्त और सही रुप में की है। कविता पर एक वक्तव्य देते हुए उसने लिखा है – "मुझे याद है–बनारसी लाल के साथ बैठकर मैंने पहली रचना की थी। हम दोनों सातवीं कक्षा के सहपाठी, बरना नदी का किनारा, साँझ वक्त और कविता विषय तय हुआ कि, हम जिस पत्थर पर बैठे है उसकी दो पंक्तियाँ मुझे अब भी याद है।

मेरे मित्र ने रचना देखी। मुझे समझाया कि, पहली पंक्ति में दो मात्राएँ अधिक थी। वे मुझसे गुनी थे इसलिए उनकी राय मैंने मान ली, और उसके बाद नित्य लिखता आ रहा हूँ। प्रारंभ में किशोर मित्र के बीच विशिष्ट होने की तीव्र इच्छा ने, स्कूलों में प्राप्त होनेवाले पुरस्कारों ने, सम्मेलनों ने, परिवार के लागोंको मेरे प्रति उत्पन्न हुए गर्व ने अक्सर मुझसे लिखवाया है। तब में अपने चीजों के प्रति नहीं, अपने पद्यों के प्रति सचेष्ट था। वर्षों बाद जब यह मोह–भंग हुआ यह जानते हुए भी कि कवि होना कितना हास्यास्पद है। मेरी रचना प्रक्रिया एक ऐसी ऊब है, जो मुझे दूसरी रचना के आरंभ से जोडती हैं। और प्रत्येक रचना के अंत के बाद वह व्यर्थ–सी प्रतीत लगती हैं। कविता के प्रति मोह और मोहभंग के बीच में धूमिल सदैव झूलता – सा दिखाई देता हैं। एक ओर उसे विश्वास होता हैं कि, यादे कभी कहीं कुछ

होता हैं कि, यदि कभी कहीं-कुछ कर सकती हैं, तो वह कविता ही कर सकती हैं।

"कविता सिर्फ उतनी ही देर तक सुरक्षित हैं,
जितनी देर, कीमा होने से पहले
कसाई के ठीहे और तनी हुएं गँडास के बीच
बोटी सुरक्षित हैं।" (1)

इस तरह के आस्था और अनास्था भरे परस्पर विरोधी वक्तव्यों की धूमिल के साहित्य में कोई कमी नहीं है। धूमिल का यह कथन है कि, वैसे कविता ऐसी उपलब्धि नहीं जिस पर गर्व किया जा सके, क्योंकि कविता वस्तु-सत्य से आगे नहीं जाती।

"कविता :-
शब्दों की अदालत में
मुजरिम के कटघरे में खडे बेकसूर का
हलफनामा है।" (2)

उसकी कविता विषयक धारणाओं का अंतरछंद उजागर करनेवाला लगता हैं। वस्तुतः कविता कवि के मन अंतःकरण के भाववेग की परिणती होती हैं। धूमिल की समग्र कविताओं का समन्वित स्वर-सम-सामायिक व्यवस्था के प्रति असंतोष का है। अनास्था का है। धूमिल के कविता लिखने के दो तरीके है। एक सहज और दूसरा सायास। सहज या अनायास कविता लिख लेनेवाले स्वयं को देव या ईश्वर से मिली विशेष प्रतिभा के धनी मानते हैं।

उनका कहना है कि, कविताएँ रची नहीं जाती। वह खुद-ब-खुद रच जाती हैं या अवतारित हो जाती हैं। कोई अलौकिक शक्ति उसे लिखने की प्रेरणा देती हैं और लिखने के लिए विवश भी करती हैं। धूमिल तो सायास ही नहीं बल्कि महत्प्रयासों के बाद अपनी कोई कविता लिखकर पूरी कर लेता हैं। धूमिल अपनी कविता में, केवल अपनी ही कल्पनाओं, अनुभूति और शब्दों को रखने का आग्रह नहीं करते थे। यदि उन्हें कोई और कल्पना याद आती तो उसे वह अपनी कविता में निःसंकोच उतार देते। लोगों से बातचित करते समय यदि चमत्कृत करनेवाला कोई वाक्य सुनने को मिलता तो उस वाक्य को तुरंत अपनी कविता का एक अंग बना डालते थे।

वस्तुतः कविता के क्षेत्र में कल्पनागत या वैचारिक मौलिकता एक विवादास्पद विषय है एक दो स्वानुभूतियों का उल्लेख कर धूमिल के मजबूत छीनने के स्वभाव विशेष चर्चा से कविता की भावपक्ष और विचार पक्षगत मौलिकता कई बार कम सार्थक लगती हैं। विशेषता कुछ ऐसे प्रसंग जब घटित होते हैं जिनमें उक्त मौलिकता भी भावगत मौलिकता की समीक्षा शास्त्रीय कसौटी है।

धूमिल की काव्य संबंधी मान्यताओं में एक विशेष मान्यता यह भी थी, वह एक ओर समान धर्म रचनाकारों से अनेक विषयोंपर बहस करता ही था। साथ-साथ साधारण लोगों में जाकर उनके सुख-दुःखो को सुनाता हुआ बडा चौकस रहता था। किसी भी चमत्कृत करनेवाली उक्तियों को अपने कविता में स्थान देना उसका स्वभाव बन गया था। इससे होता यह था कि कभी वे उक्तियाँ कविता के कथ्य के साथ मिल जाती तो कभी ऐसी बेमेल और हास्यास्पद हो जाती, जैसे किसी बारात में बैंडवाले मौत का सामान ले चले जाने की धुन बजा रहे हो।

धूमिल की उसी आदत से अपनी असंबध्दता ने उसकी कई कविताओं को दुरुहता की सीमा तक पहुँचा दिया है। वह पहले किसी कविता के विषय को लेकर कई दिन औरोंसे बहस करते और खुद भी सोचते रहते थे। उस विषयपर जो भी सूझता उसमें से जो लिख लेने को योग्य होता उसे लिख लेते और फिर उसें "तरतीब" देकर कविता की रचना कर डालते थे। उसकी इस सृजन प्रक्रिया का बहुत अच्छा परिचय देते हुए काशिनाथ सिंह ने लिखा है-

"उसकी कविता लिखने की प्रक्रिया मुझे रीतिकालीन आचार्यो की याद दिलाती हैं। वह कविता करता नहीं था बनाता था। जिस तरह रीतिकालीन कवियों का सारा ध्यान सवैया या कवित्व की अंतिम पंक्तिपर केंद्रित होता था या सबसे पहले उनके दिमाग में "समस्या" आती थी और वे उसकी पूर्ति ऊपर के तीन या सात पंक्तियों से करते थे। उसीतरह धूमिल के दिमाग में जुमले आते थे और ये जुमले कभी तो उनके उपजाऊ दिमाग की उपज होते थे और कभी उसके लोगों की बातचीत से हासिल होते थे। फिर वे जुमले उसके लिए कविता में प्रस्थान बिंदु की तरह होते थे। इसका चित्रण धूमिल की "कविता" नामक कविता में मिलता हैं।

"अब उसे मालूम है कि कविता
घेराव में
किसी बौखलाए हुए आदमी का
संक्षिप्त्त एकालाप है।" (3)

कहीं कहीं ऐंसी सूक्तियाँ कविता के अंत में न होकर आरंभ या बीच में है। जैसे -

"हर आदमी एक जोडी जूता हैं
जो मेरे सामने मरम्मत के लिए खडा है।" (4)

इसके सिवा धूमिल के पास अनेक ऐंसी सुक्तियाँ थी, जिन्हें कविता में शामिल होने के लिए वर्षों का इंतजार करना पडा है। जैसे - "औरतें योनि की सफलता के बाद गंगा का गीत गा रही है। इसके अतिरिक्त जितनी सुक्तियाँ उस समय तक कविता में जगह नहीं पा सकी थी, वे सब की सब धूमिल

की सबसे लंबी कविता पटकथा में आ गयी। धूमिल का प्रिय शब्द था – "इग्जास्ट" जिसका इस्तेमाल वह उस कविता को लिख डालने के बाद करता था, जिससे वह पूरी तरह संतुष्ट होता। साथ ही इसका अर्थ यह भी होता था, कि अब फिलहाल अगली कविता की सामग्री उसके पास कहीं रह गयी है। पटकथा समाप्त करने के बाद धूमिल ने ही कहाँ था, "मैंने इस कविता में खुद को "इग्जास्ट" कर दिया है।

धूमिल के और दो बडे प्रिय शब्द थे, जिनका संबंध उसकी रचना – प्रक्रिया से है। "अमल्गमेशन और चैनेलाइज।"

एक का प्रयोग तब करते थे, जब वे पंक्तियाँ एक केंद्रिय विचार या संवेदना के साथ सिलसिला था क्रम पकड लेती थी और उसके आगे स्पष्ट हो जाता था कि, अब कविता पूरी होने में देर नहीं है।

धूमिल की रचना प्रक्रिया का ज्ञान हमें उसके कविता विषयक विचारों को समझने में सहायक होता हैं। धूमिल कविता को दर्द की दवा या फिर जादू की छडी नहीं मानते थे। यद्यपि वह स्वयं को कवि होने के नाते विशिष्ट होने की भ्रांति कुछ दिनों तक पालते रहे थे। परंतु शीघ्र ही उसे कविता की सीमाओं का बोध हुआ इसलिए कविता के बारे में उसकी रचनाओं में जब कभी कुछ उल्लेख आते हैं तो उनके पीछे उसकी कठोर बौध्दिकता का प्रभाव दिखाई देता हैं। उसकी दृष्टि में कविता क्या थी ? इसका उत्तर उसकी कुछ रचनाओं के सहारे दिया जाता हैं।

धूमिल की सबसे पहली रचना "कविता" शीर्षक से छपी थी। इस कविता को पढकर पाठक चौंक जाते थे। पाठक कुछ विचलित से हो जाते। जिसने कविता को भारतीय काव्यशास्त्र में कामिनी, वधू, आदि रुपों में वर्णित होता देखा अर्थात पढा है। समूची मानवीय संवेदनाओं की सरस अभिव्यक्ति का दावा करनेवाली कविता को घेराव के किसी बौखलाए हुए आदमी का अख्य–सदन मात्र करार दी जाती देखकर तो पाठक का मन विक्षोभ से भर जाता हैं। इतने पर भी कविता के अस्तित्व की व्यर्थता का बोध कविता में नहीं उभर पाता। कविता की यह उपलब्धि समय के विचार से कम महत्वपूर्ण नाहीं की जा सकती।

धूमिल का समकालीन बोध बहुत गहरा था। अपने समय की बिगडी हुई व्यवस्था के विरोध में

वह अपने को खडा कर चुका था। एक राजनीतिक का व्यवस्था-विरोध अलग-अलग होता हैं। विरोध का स्वरुप और जो भी हो उद्देश एक ही होता हैं। उस व्यवस्था को बदल देना धूमिल समझता था।

"मुझे अपनी कविताओं के लिए
दूसरे प्रजातंत्र की तलाश है।"

और उसके प्रचलित प्रजातंत्र में -

"और विपक्ष में
सिर्फ कविता हैं।" (5)

अपनी अवांछित व्यवस्था के विचारों में कविता को रखना कविता की शक्ति-सामर्थ्य के प्रति आस्थावान है। इसमें कोई शक नहीं कि धूमिल कवि और कविता की सीमाओं से परिचित था फिर भी उसकी शक्ति में विश्वास था।

"अंतमें कहूँगा
सिर्फ इतना कहूँगा
हाँ, हाँ मैं कवि हूँ
कवि याने भाषा में
भदेस हूँ।" (6)

कविता को विपक्ष में रखने की महत्वकांक्षा को उक्त आकांक्षा का ही परिणाम समझा जा सकता हैं। उसकी आलोचना में सहयोग की प्रवृत्ति अधिक देखी जाती हैं। धूमिल की कविता में विध्वंस और असहयोग की अपेक्षा व्यवस्था के दोषान्वेषण की प्रवृत्ति को विपक्ष या प्रमुख गुण माना है। अर्थात यह बातें उसके राजनीतिक बोध से अधिक संबंध्द है।

धूमिल सत्ताधारी पक्ष को सुविधा-भोगी मानते थे और उसके विरोध में जाने की रक्षा समझते थे। जहाँ सुविधाएं सत्ता के साथ संलग्न हो जाती है वहाँ न्याय और सत्य की हत्या अवश्यंभावी हो जाती हैं। इस स्थिति को ध्यान में रखकर वह कविता का दायित्व निश्चित करते हैं। और वह लिखते हैं -

"कविता हत्या नहीं करती
खून की रपट कानूनी
मसलों पर
पडताल करती हैं
ताकि न्याय कायम हो।" (7)

और -

"जब ज्यादा तर लोग सहमत होने
लगते हैं सुविधा के किसी खास
नुक्ते पर वाजिब शंकाओं के साथ
हक जैसे एक मामुली शब्द को
मोर्चे पर बहाक करती हैं
सत्य को सुरक्षा इसलिए।" (8)

कविता से न्याय और सत्य की रक्षा करना समाज को बचाने का प्रयास करना ही है। प्राचीन कविता सामाजिक को सहज मानवीय सद्‌गुणों से संयुक्त करने के लिए "कान्ता-संम्मत" उपदेश का सहारा लेती हैं। परंतु धूमिल की नयी कविता -

"और ठीक उसी वक्त कविता
शब्दों पर शान चढाने का काम
शुरु करती हैं जब आदमी के
दर्दीले गले से कोई अगिन गीत
फूटता हैं।" (9)

धूमिल की कविता को ठेठ अनुपयोगी वस्तु और कवि को अव्यावहारिक जीव समझता था। उसकी कविता पढने पर कविता संबंधी धारणाओं को निराशावाद या कुंठाग्रस्त स्थिति के अधिक समीप पडती देखा जा सकता हैं। परंतु उसकी कविता और कवि संबंधी विचारों का जो आस्थावान पक्ष है वह भी कम बलवान नहीं है। कविता क्या है ? इसका उत्तर देते हुए कवि धूमिल ने लिखा है -

"कविता क्या है?
कोई पहनावा है?
कुर्ता-पाजामा है?
ना भाई, ना
कविता -
शब्दों की अदालत में
मुजरिम के कटघरे में खडे बेकसूर आदमी का
हलफनामा है।" (10)

धूमिल का कहना है, कविता कोई बाहरी तत्व नहीं है। यह कोई अपनी नग्नता को ढकने की वस्तु नहीं है। यह तो अपनी आंतरिक निरापराधिता को सिध्द करने का साधन है। कविता से

कोई औरों की तुलना में अपना श्रेष्ठ व्यक्तित्व सिध्द करना हो या माया जोडने की ठाना ना हो यह सब बेकार की बातें हैं क्योंकि यह कविता का वास्तविक कार्य नहीं हैं।

"कविता भाषा में
आदमी होने की तमीज है।" (11)

अर्थात मनुष्य को मनुष्यत्व का अनुभव कराना ही कविता का काम है।

कवि, कविता और सामाजिकता का अन्योंन्याश्रित संबंध है। हलफनामा हो या आदमी होने की तमीज इनका समाज से बाहर कोई महत्व नहीं होता। धूमिल का यह कहना है -

"लेकिन मैंने कहा
अकेला कवि कटघरा होता हैं।" (12)

कवि और कविता के बारे में उसकी सामान्य मान्यताएँ जो भी और जैसी भी हो परंतु जहाँ उसकी अपनी कविता की शक्ति का उसे साक्षात्कार हुआ है वहाँ वह निर्ध्दन्द भाव से लिख गया है -

"मेरी कविता इसतरह अकेले की
सामूहिकता देती हैं और समूह को साहसिकता
इसतरह कविता में शब्द के जरिये एक कवि
अपने वर्ग के आदमी को समूह की साहसिकता से।" (13)

कविता के कारगर होने में धूमिल का उक्त विश्वास मात्र भावुकता पर नहीं बल्कि शास्त्रीय सत्यपर प्रतिष्ठित दिखायी देता हैं। उसकी कविता उसके जैसे मुक्तभोगी पाठकों को उनके वैयक्तिक सुख-दुःख के घेरे से बाहर निकाल कर समूह में लाकर खडा कर देती हैं। समुह में आ जानेपर उसकी सहनशीलता और असहायता प्रतिवाद और प्रतिकार की वृत्ति में बदल जाती हैं। कविता का यह प्रभाव अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

धूमिल की कविता में आयी वर्ग-मित्र और वर्ग-शत्रु की कल्पना यदि स्थुल रुप में ले तो बात कुछ संयुक्तिक लगती हैं। अन्यथा विषम स्थिति उत्पन्न होने की आशंका है। कविता का प्रयोग अहिंसक मार्ग से वर्ग-मित्रों को जीतने के लिए होता हैं। जो भी हो, धूमिल कविता को शक्ति और शक्ति में अहिंसा को आस्था और श्रध्दा से देखता था यही स्पष्ट होता हैं।

धूमिल कविता और कवि के सामाजिक मूल्यों के प्रति सतर्क जीव थे। केवल उसकी कविता में ही नहीं तो गद्य रचनाओं में भी उक्त सतर्कता देखने को मिलती हैं। उसकी कोई स्वतंत्र गद्य रचना नहीं है। एकाध निबंध, एकाध वक्तव्य, मित्रों के नाम कुछ चिठ्ठियाँ इन सब में कवि और कविता के बारे में विशिष्ट उल्लेख अवश्य आते हैं। उसने डायरी के एक पृष्ठ पर अंकित किया है। -

"गुरुवार, 13 फरवरी 1969"

"मैं महसूस करने लगा हूँ कि, कविता आदमी को कुछ नहीं देगी सिवा उस तनाव के जो बात-चित के दौरान दो चेहरों के बीच तन जाता हैं। इन दिनों एक खतरा और बढ गया है कि, ज्यादातर लोग कविता के चमत्कार के आगे समझने लगे हैं। इस स्थिति में सहज होना जितना कठिन हैं, सामान्य होने का खतरा उतना बल्कि उससे ज्यादा है।"

फिर भी मैं कविता को आदत होने से बचा रहा हूँ। हाँ, यह एक प्रक्रिया अवश्य है मुक्ति के लिए नहीं मुक्त होने के एहसास के लिए। ....

धूमिल की दृष्टि में कविता का दायित्व था "चेतावनी देना।" उसके मन में कविता के नैतिक होने न होने को लेकर निर्भ्रांत धारणा थी और कविता को वह सहानुभूति माँगने वाली नहीं मानते थे। कवि धूमिल सहानुभूति को अपेक्षा सहमती को अधिक आवश्यक समझता था। भावात्मकता का अभाव और वैचारिकता का एक-छत्र प्रभाव उसकी कविता का लक्षणीय गुण माना जा सकता हैं। इस गुण को ध्यान में रखकर कुछ आलोचक उसें विचार-कवि कहते हैं।

धूमिल ने कभी भी कहीं पर भी अपनी कविताओं की भावात्मक गहराई का आग्रही प्रतिपादन किया हो ऐसी बात नहीं। इसलिए उसकी कविताओं में संवेदनशीलता के मार्मिक प्रसंगों की खोज करना या तो उसकी रचनाओं को गलत समझना है या फिर स्वयं को धोखा देना है।

कविता पर एक वक्तव्य में उसने बडे ही दो टूक शब्दों में अपनी कविता का स्वरुप, उद्देश और उपलब्धि की चर्चा करते हुए लिखा है। -

"मेरी कविताएँ गुस्से और ग्लानि की इन्हीं स्थितियों में लिखी गयी हैं, जिनमें मेरी कविताओंका मूल स्वर बोध को उसके सही डायमेंशनों में रखता हैं। ऐसा केवल इसलिए है कि, हम कहीं न कहीं संलग्न है। और यह संलग्नता किसी हद तक हमें "प्रतिबध्द" होने की कोशिश तक जरुन ले जाती हैं। मैं जान गया हूँ कि किसी जगह बम गिरने की पीडा से चाय के ठंडे होने का दुःख कितना बडा है।

"कोई चीज कहाँ है और कैसे है? का सही बोध ही मेरी रचना का धर्म है।

इसी क्रम में चीज को निर्वासिन करने की बात महत्वपूर्ण है। चीज को नंगा करना उद्देश नहीं, बल्कि उसके सही "कंद" को प्रस्तुत करने की एक प्रक्रिया मात्र है।"

धूमिल के उपर्युक्त वक्तव्य से उसकी कविता की भूमिका समझने में सहायता होती हैं।

साथ-साथ चीजों के चौथे डायमेंशन की खोज का मौलिक विचार भी स्पष्ट हो जाता हैं। प्रतिबध्दता धूमिल की वृत्ति नहीं है। संलग्नता उसकी प्रकृति थी। प्रतिबध्दता और संलग्नता के बीच का भावात्मक विशेष अंतर समझ लेने पर उसकी किसी भी कविता को समझना या उसकी परिभाषा-व्याख्या करना कठिन काम नहीं लगेगा।

सारांश रुपमें इतना कहा जा सकता हैं कि, धूमिल कविता के बारे में पूरी तरह से सचेत जागरुक थे। कवि-कविता की शक्ति सीमाओं को जानते हुए भी उसकी सामाजिक आवश्यकता के प्रति आस्थावान थे। अपनी निजह अनुभूतियों को ईमानदारी के साथ अंकित करना उनके लिए श्रेष्ठ कवि धर्म था। उसकी कविताओं से इसी ईमानदारी के कारण पाठकों को कविता द्वारा वर्णित वस्तुओं के चौथे डायमेंशन के साथ पूरा और खरा बोध है। जितनी स्पष्टता उसकी कविता में मिलती हैं, औरों की कविताओं में शायद ही मिलेगी। इस स्पष्टता का मूल कारण कवि की हर वर्णित विषय के संबंध में स्पष्ट धारणाएँ थी। जहाँ कहीं, धारणागत द्वंद्व या परस्पर विरोध मिलता हैं, वहाँ कविताओं में भी कुज गुड्डम गुडड की प्रतिती स्वतः ही उभरती हैं। ऐसे कुछ अवसर उसकी कविताओं नें दुर्लभ नहीं है। उनका संकेत अगामी पृष्ठों में उसकी कविताओं को बहुविध दृष्टि से परखने में स्वतः ही होगा। कविता संबंधी अपनी धारणाओं में धूमिल इसलिए विशिष्ट समझा जाता रहा कि उसने कविता को सार्थक वक्तव्य के रुप में परिभाषित कर दिया है। सार्थक वक्तव्य कहने से कविता के अनेक गुण उपेक्षित रह जाते हैं। उनकी उक्त मान्यता पर बडी सार्थक टिप्पणी करते हुए डॉ. रामस्वरुप चतुर्वेदी ने लिखा है -

"यह भी संभव है कि पहचान में ही इधर अंतर हुआ है। कविता अधिकांश युवा लेखन में अब "अभिव्यक्ति" के बजाय या पहले "वक्तव्य" मानी जा रही है ऐसी स्थिति में स्वभावतः उसमें वक्तृत्व पर अधिक बल होता हैं। अब धूमिल सही कविता को एक सार्थक वक्तव्य घोषित कर रहे हैं। वे यह भूल रहें है कि, नारेबाजी और संचार माध्यमों की भरपूर सुविधा के इस युग में तो वक्तव्य को भी बनाये रखने के लिए कविता की रचनात्मक क्षमता उपेक्षित हैं। सार्थक वक्तव्य और सही कविता, यानी बोलाचाल और संप्रेषण एक अंतर प्रक्रिया है पर प्राथमिकता की दृष्टि से भाषा मात्र को सार्थक रखने के लिए "वक्तव्य की बजाय आज कविता की अधिक जरुरत हैं।"

संभवतः जब धूमिल सातवीं कक्षा में थे तभी से तुकबंदियाँ करने लगे थे। 1957-58 से 1963 तक उनका झुकाव गीतों की तरफ मिलता हैं। उन दिनों उन्होंने गीत, बिरहा, दोहा, शेर आदि के अतिरिक्त कई कहानियाँ एवं निबंध भी लिखे और तभी से लेखन का सिलसिला निरंतर चलता रहा।

"प्रकाशित रुप में सबसे पहले उनकी एक कहानी "फिर भी वह जिंदा है"(जून 1960) मिली है। इसके बाद कोमलकांत पदावली में गीतों का प्रकाशन होता रहा। 1961-62 के दौरान तमाम गीत

रचनाएँ प्रकाश में आई। इस बीच "नीहार" (जून 1961) में एक गीत प्रकाशित हुआ उसीके आवरण पृष्ठपर "बासुंरी जल गयी" गीत के प्रकाशन की सूचना है। परंतु यह गीत कहीं मिलता नहीं और न "नीहार" का अगला अंक ही मिलता हैं। वैसे "बासुरी जल गई" उनकी कोई गीत रचना थी अवश्य, क्योंकिं इस गीत को कोई सज्जन के आवाहनपर उन्होंने गाया था।

"श्वास के उच्छवास से जल गई बासुरी
बांसुरी जल गई।" (14)

1963 के आस-पांस के उनकी रचनाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में छपने लगी थी। "शीशे पर लोटती रोशनी" जनवरी 1963 में कविता संग्रह के प्रकाशन की योजना बनाई किंतु किन्हीं कारण वश सफलता न मिल सकी। आगे चलकर नयी कविता और उसके बाद एक निबंध "भारती" 1965 में प्रकाशित हुआ। इस निबंध के माध्यम से उन्होंनेनयी कविता के बाद की संभावनाओं को उद्घटीत किया।

1972 में उनका प्रथम काव्य संग्रह "संसद से सडक तक" प्रकाशित हुआ। इस संग्रह में कुल 25 कविताएँ है। इस संग्रह की कविताओं के माध्यम से पाषाण खनक धूमिल ने जहाँ लोगों के मस्तिष्क को झकझोरा वहीं उनकी भावगत संवेदनाओं ने कुंठित मनोवृत्ति को प्रस्तुत मुल्यहिनता, अराजकता और चेतना की द्वंद्व स्थिति से जो व्यष्टि और समाष्टि की अभिव्यक्ति के कारण जो त्रासदी बनी हुई थी वह तनाव रहित स्थितियों में आरोपित कर संवेदनाओं की वक्रता के अंतरविरोध का स्वर मुखरित किया। यही कारण हैं कि, उनकी इस कृति में बौध्दिकता वैचारिकता और यथार्थ का समावेश हैं।

उपलब्ध रचनाओं के आधारपर अपनी सामाजिक पृष्ठभूमि में धूमिल समकालीन हिंदी कविता का हिमालयन ब्लेंण्डर हैं। यानी कविता द्वारा व्यक्ति के भीतर वैचारिक संक्रमण करता हैं। यह उसके कवि की ताकद है। अपने यौन प्रतिकों और बिंबो के माध्यम से जहाँ वह समाज के "पैरालाइज्ड" अंगों को शॉक देता हैं। धूमिल के कविताओं के भीतर का अंतरविरोध अपनी ऐतिहासिकता में आज के समूचे युवा लेख का अंतरविरोध है।

धूमिल के व्यक्तित्व की वह खास पहचान थी कि, वह जब भी नई चीज प्रस्तुत करना चाहते थे अपनी मूछोंपर हाय फेरने की तरह की एक चुटकुला सुनाकर ओंठ के भीतर मुस्कुरा देते थे। उनका यह मधुर मुस्कान अणुबम के भीषण विस्फोट-सा था। जो कालांतर में अपनी विभीषिका में परिवर्तित होकर अनुयायी कवियों के लिए एक चुनौती बन गया। कविता के भीतर और कविता के बाहर उनके सवाल जूझते रहें।

"अपने आप से सवाल करता हूँ
क्या आझादी सिर्फ तीन थके हुए रंगो का नाम हैं
जिन्हें एक पहिया ढोता हैं
या इसका कोई खास मतलब होता हैं।" (15)

"संसद से सडक तक" के बाद "कल सुनना मुझें" धूमिल का दूसरा काव्य संग्रह प्रकाशित हुआ जिसका प्रकाशन काल 1977 है। "सुदामा पांडे का प्रजातंत्र क्रमशः धूमिल का तृतीय कविता संकलन है।

इसप्रकार धूमिल के इन तीनों संग्रहों में 122 कविताएँ है। डॉ. शुकदेव सिंह ने "धूमिल की कविताएं" शीर्षक से एक नया संग्रह निकाला है। जिसमें धूमिल की कुल 27 चुनी हुई श्रेष्ठ कविताएं है।

1980 में धूमिल की फुटकल कविताएं पत्रिका के रुपमें छपी जिसमें कुछ व्यंग्यात्मक वक्तव्य की कविताएँ है। इस सबके बावजूद धूमिल ने सुकान्त महाचार्य की बंगला कविताओंका भी हिंदी रुपांतरण किया जो "आवेग--11" तथा "सर्वनाम-11" में प्रकाशित हुआ। इसी दौरान धूमिल ने गोविंद और मोहन के साथ "विनियोग" नामक अपनी-अपनी कविताओंका संकलन प्रकाशित कराया।

किंतु अब भी कुल मिलाकर दो सौ कविताएँ जिनमें से लगभग पच्चीस ऐंसी कविताएँ है जो तत्कालिन पत्र पत्रिकाओं से प्रकाशित एवं सम्मानित हुई है।

समकालीन रचना धर्मिता में धूमिल का सारा कृतित्व एक ऐतिहासिक दस्ताऐवज है। कवि ने अत्यंत स्पष्ट भाषा में अपने उद्‌गार व्यक्त करने की अद्‌भूत कला का सूत्रपात किया है। इसे वर्तमान भले ही न स्विकार करें लेकिन आनेवाले कल के लिए निश्चय ही एक धरातल है, होगा।

रचना और आलोचना में इधर बीस-पच्चीस वर्षोंसे जो लडाकूपन आया है हाथ पसारकर गर्दन झुकाकर जी हां-हुजूर इधर मुखातिब होईए। उनकी रचनात्मक उपलब्धि का परिणाम की दृष्टि से हम कमशः चार आधारोंपर रेखांकित कर सकते हैं,

1. ग्रामीण समस्याओंका सिंहावलोकन
2. नारी सेक्स और भावुकता
3. राजनीतिक परिदृश्य
4. व्यंग्य और समकालीन यथार्थ

आधुनिक समाज के टुटने और बिखरने की पीडा धूमिल के काव्य में व्याप्त हैं। जिस संक्रमण

काल में धूमिल जीवित रहें साहित्य रचे वास्तव में वह मूर्तियों के टुटने का ही काल था। धूमिल के लिए उनकी कविताएँ न मनोरंजन है और ज्ञानरंजन। इस बारेमें उनका दृष्टिकोन देखिए।—

"कविता में जाने से पहले
मै आपसे ही पूछता हूँ
जब इससे न चोली बन सकती हैं
न चोंगा
तब आप कहों
इस ससुरी कविता को
जंगल से जनता तक
ढोने में क्या होगा।" (16)

धूमिल की अपनी कविता में हिंदुस्थान का समकालीन हिंदुस्थान नाम का एक वास्तविक चेहरा प्रस्तुत करना चाहते थे। कवि आजादी इन महोत्सव शांति आस्था, कानून, पंचशील आदि शब्दों की अर्थवत्ता को उधेडकर रख देना है। वे टूटे हुए फुलों के नीचे वीरान सडकों पर टूटी हुई चीजों की ढेर में अपनी खोई हुई आजादी का अर्थ ढूँढना चाहते हैं। किंतु उन्हें चारों ओर दूषित विचार दिखाई पडते हैं। हर कोई अपने काम में लगा हुआ सहानुभूति, प्यार, आत्मीयता, अहिंसा, ईमानदारी और विवेक की आड में छल रहा है।

सिर्फ एक शोर है
जिसमें कानों के पर्दे फुट जा रहें है
शासन, सुरक्षा, रोजगार, शिक्षा ....
राष्ट्रधर्म, देशहित, हिंसा, अहिंसा ..
सैन्य शक्ति, देशभक्ति, आजादी, वीसा,
वाद, बिरादरी, भूख भीख, भाषा,
शांति, क्रांति , शीतयुध्द, एटमबम, सीमा,
एकता सीढियां, साहित्यिक पीढियाँ निराशा
झांय- झांय खांय-खांय, हाय-हाय, सांत्र-सायं।" (17)

व्यावहारिकता की बटी हुई रस्सी में झूलती हुई संवेदनाओं की खुदकशी का कवि चीखने लीक तोडने और साफ-साफ बोलने को कहता हैं।

"अपनी आदतों में
फूलों की जगह पत्थर

मासूमियत के हर तकाजे को
ठोकर मार दो
अब वक्त आ गया कि, तुम उठो
और अपनी उब को आकार दो।" (18)

धूमिल अपनी कविता के विषय में स्पष्ट कहना चाहते थे कि, उनकी कविता का उद्देश क्या हैं। वे कविता के द्वारा समाज में परिवर्तन तो चाहते थे लेकिन कविता को हथियार की तरह इस्तेमाल करना नहीं चाहते थे।

रचना के लिए दो चीजें आवश्यक है, कलात्मक अनुभूति या संवेदना और उसके प्रति तटस्थता का आप जो उसे सम्प्रेष्य बना सके। मोचीराम ने धूमिल की चमत्कार प्रियता के कारण बात बनने की कुशलता और अभिचेतना की ओर जाता हैं।

मोचीराम, राजकमल चौधरी के लिए, अकाल दर्शन, प्रौढ शिक्षा आदि कविताएँ युवा कविता के संदर्भ में एकदम ताजा बल्कि कभी-कभी तो अप्रत्याशित भी लगती हैं। इन विषयों से धूमिल जो काव्य संसार बताते है यह हाशिये की दुनिया नहीं। यह दुनिया जीवित और पहचाने जा सकनेवाले मानव चरित्रों की दुनिया है, जो अपने ठोस रुप-रंगों और अपने चारित्रिक मुहावरों में धूमिल यहाँ उजागर होता हैं।

स्वानुभूति को काव्यानुभूति में तराशकर उसका पुर्नसृंजन करना धूमिल की विशेषता हैं। स्त्री को लेकर लिखी गयी उनकी कविता - "उस औरत की बगल में लेटकर" किसी तरह का आत्मप्रदर्शन जो इस ढंग की युवा प्रतिभाओं की लगभग एकमात्र चारित्रिक विशेषता ही नहीं है, बल्कि एक ठोस मानव स्थिति की जटिल गहराईयों में खोज और टटोल है, जिसमें दिखाऊ आत्महीनता की बजाय अपनी ऐसी पहचान है जिसे आत्मसाक्षात्कार कहा जा सकता हैं।

"उस औरत की बगल में लेटकर
मैंने महसूस किया कि घर
छोटी-छोटी सुविधाओं की लानत से
बना हैं।" (19)

धूमिल की कविताओं में हरी-भरी दूव यानी की लघु मानव की आशाओं, आकांक्षाओं का प्रस्तुतीकरण बडे सुंदर ढंग से हुआ है। जैसे -

"भूख ने उन्हें जानवर कर दिया
संशय ने उन्हें आग्रहों से भर दिया

फिर भी वे अपने है
अपने है
अपने है
जीवित भविष्य के सुन्दरतम सपने है।" (20)

अस्तित्व का यह संघर्ष व्यक्ति के रुपमें मात्र धूमिल का ही नहीं बींसवी शताब्दी की सृजनशील मेहनतकश जनता का अपना इतिहास है। "लोकतंत्र के इस अमानवीय संकट के समय कविताओं के जरिये मैं भारतीय बम पन्हा के चरित्र को भ्रष्ट होने से बचा सकूंगा। एकमात्र इसी विचार से मैं रचना करता हूँ।

धूमिल का अक्कडपन उनकी कविताओं में पूर्णता के साथ उभरा हुआ है। धूमिल की कविता में मनुष्य की पहचान जहाँ कहीं मिलती हैं, वहीं उनकी कविता का श्रेष्ठ अंश हैं और उनको सामने रखकर उनकी असत्य तिल मिलाहट को देखे तो यह तिल मिलाहट अतिरंजीत नहीं लगती।

धूमिल अपनी जमीन पर खडे होकर अपनी कविता की अपनी मिट्टी का शब्द देते थे। उनकी कविता का तेवर एक देहाती कवि का मुँहफट तेवर है। उनकी कविता एक खरी अभिव्यक्ति हैं।

डॉ. नामवर सिंह के अनुसार धूमिल की कविता मजबूत धरातल की ओर बढी। शिल्प और बिंब नियोजन में काफी सजगता आ गई। उस समय नयी कविता खासकर अर्थ की लय के घोर विरोध में वे अपना स्वर उँचा करते रहें। जहाँ कविता के नामपर "सुविधा की तहजीब से बाहर चौधरी अपना चमरौंधा उतार गये है। वे अपनी कविता में सिर्फ सत्य का पक्षधर बनकर सामने आना चाहते थे।

"मैं सहज होना चाहता हूँ
ताकि आम को आम
और चाकू को चाकू कह सकूं।" (21)

वस्तुतः धूमिल की कविता उनके व्यक्तित्व के अनुरुप आधुनिक मानव के मोहभंग, त्रय, संत्रास, उत्पीडन, आक्रोश, शोषण, और संघर्ष की कविता हैं। उनमें जो सादगी, आत्मीयता, आत्माभिमान एवं आक्रमकता थी, उनकी कविताओं की अभिव्यक्ति बन गई है। अपनी उपलब्धियों को उसने कटु अनुभवों की रोशनी में अपने कठोर साहित्यिक प्रभावों से हासिल किया। धूमिल अपनी कविता में खुद को खोते हैं। कहीं खुद को खोजते हैं और कहीं खुद को मानव मूल्यों से जोडकर उसका संपृक्तिकरण है। अस्तु खोने-खोजने और संम्पृक्तिकरण के बीच विशेष दिलकश काव्याभिव्यक्ति धूमिल का अपना सामान्यकृत व्यक्तित्व हैं।

क्या कारण हो सकता हैं जब साहित्यकार जीवन मूल्यों की स्थापना करता हैं। सामाजिक

संकल्पित चेतना का निर्वाह करता हैं। ऐसी परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में अपनी रचना धर्मिता को "निज" केंद्रित रखे।

वास्तव में देखा जाय तो कवि की रचनाधार्मिता को "निज" भोगे हुए यथार्थ अनुभूत सत्यों संपन्न अनुभव पुंजो की यथार्थमयी अभिव्यक्ति होती हैं। धूमिल अपने निजी पारिवारिक परिवेश से भी अपनी रचनात्मक संवेदना में प्रतिबध्द करता हैं। क्योंकि प्रत्येक समस्या एवं रचना धर्मिता कल्पना लोक , अंतर्मुखी रोमानियत को चित्रित नहीं करती। अपितु वैयक्तिक होते हुए भी यथार्थ की ठोस पृष्ठभूमि पर अवस्थित यथार्थ की परतें उधेडती हैं, क्योंकि आज व्यक्तित्व भी पर्तोवाला हो चुका है।

धूमिल की वैयक्तिक चेतना कालांतर में निजता के धरातल पर विशिष्टता स्थापित करती हुई समाज में व्याप्त बिंबो को प्रसारित करती हैं। धूमिल की सृजनात्मक दायित्व जहाँ सामाजिक सत्यों की सर्वांगीण अभिव्यक्ति करता हैं, वहीं वह अपने जीवन अनुभवों, वैयक्तिक पारिवारिक, यथार्थ बोध संपन्न समस्याओं को भी अपनी रचना प्रक्रिया में केंद्रित रखता हैं।

धूमिल की वैयक्तिक रचना धर्मिता में प्रथम सोपान उसकी पारिवारिक उत्तर दायित्वों की संकल्पात्मक भावना है। यह कवि मूलतः घरबारी इन्सान है। उसके कंधेपर अल्पायु में ही पारिवारिक उत्तरदायित्वों का बोझ पडा। साहित्य कर्म में संलग्न सामाजिक मूल्यों के निर्माण हेतु जब वह शोषित स्थितियों गरीबी को अपने ही परिवार में देखता हैं तो ऐसी स्थितियाँ अनायास ही उसकी सृजनात्मक प्रक्रिया केंद्रित हो जाती हैं।

एक ओर रचयिता निजी परिवार माता-पिता, पत्नी, भाई, बच्चे है तो दूसरी ओर उसका रचना संसार। यह सहज स्वाभाविक ही है कि यदि कवि खुद निम्न मध्यवर्ग से संबंधित हैं तो इस वर्ग की मनःस्थितियों तिरस्कृत वर्ग की संवेदनाओं एवं मध्यवर्ग की पालतू अंतर्विरोधी नीतियों से तथा उच्च वर्ग की अमानवीयता से भली भांति परिचित हो, समाज के उपेक्षित वर्गीय लोगों को वह अपना कंधा दे रहा है, तभी उसे अपनी स्थिति धूमिल प्रतीत होती हैं।

एक ओर उसका सृजनात्मक पक्ष अपने परिवार की विवश स्थितियों को अभिव्यंजित करता हैं तो दूसरी ओर विवश स्थितियों के उत्तरदायी लोगों में एवं व्यवस्था पर संश्लिष्ट व्यंग्य करता हैं, जिसमें दयनीय स्थितियाँ ही नहीं अपितु उन दयनीय स्थितियों के जिम्मेवार षड्यंत्रकारी लोग है ऐसा धूमिल का कहना है।

"बच्चा सुला दिया जाता है लोरियों से
झिडकियों मे पीपल का भूत।

"जिंदगी का तमाम दुःख दर्द लालचे
लोरियाँ लडाईयाँ और पीपल के भूत
यह सब नींद के बहाने है
लेकिन बच्चा खाएगा क्या? कैसे जियेगा?
बच्चा जब जागेगा क्या माँगेगा।" (22)

धूमिल परिवार एवं समग्र समाज में संपन्नता, प्रसन्नता का वातावरण लाना चाहता हैं, सुविधाजीवी होकर नहीं, अपितु संघर्षशील होकर –

"यद्यपि उनकी जरुरतों के लिए
मैं अपना पूरा कंधा
दे देना चाहता हूँ
मगर टुटते हुए परिवार में
धनुष टंकार झेलते हुए
जवान बछडे–सा कराहता हूँ।" (23)

धूमिल जीवन पर्यंत परिवार के संचालन हेतु संघर्षशील रहे परंतु परिवारों एवं समाज की अंतरविरोधी नीतियों के समक्ष कई बार असमर्थ भी रहे। किंतु वे अपने दायित्व के प्रति सदैव सचेत रहते थे। इसीलिए अंतर्विरोधी परिवेश में अपने परिवार को पूर्ण सहयोग नहीं दे पाता। पूँजीवादी समाज उसके परिवार एवं गांव का शोषण करने में संलग्न है।

रचयिता को दुख इसी बात का है कि गांव ही हमारी प्राचीन संस्कृति एवं रीढ की हड्डी है वहीं सर्वत्र निराशा ऊब एवं झगडे हैं। धूमिल ऐसे निरक्षर अशिक्षित लोगों को प्रौढ शिक्षा देकर उनकी सुप्तावस्था को जागृत करना चाहता हैं।

"तुम अपढ थे
गँवार थे
सीधे इतने की बस
दो और दो चार थे।" (24)

धूमिल की दृष्टि में विडंबना का विषय यहीं हैं कि, पंचायत भवन में भी षड्यंत्रकारी, स्वार्थजीवी लोगों का अधिक्य है जो निरक्षर लोगों को बहकाकर दिशाहीन करते हैं। धूमिल की रचनाधर्मिता इन्हीं निरक्षर लोगों को प्रौढ शिक्षा माध्यम से सही मार्ग की ओर दिशोन्मुख कर वास्तविक स्थितियों से परिचित करवाती हैं।

कवि की काव्य चेतना इस तथ्य की द्योतक है कि, नेहरु ने भी अपनी छाती पर पूँजीवादी व्यवस्था प्रणाली को ही प्रथम दिया था। गुलाब का फूल पूँजीपतियों का प्रतीक है। गुलाब के फूल का ऐसी स्थितियों में कोई महत्व नहीं है। यदि समाज में बच्चे भूखे हो। इन्हीं स्थितियों को देखकर कवि नक्सलबाडी आन्दोलन का भी स्वागत करता हैं। यह युग की मांग थी, जिसे व्यवस्थाने निर्ममता से कुचल दिया।

धूमिल का एक ऐसा सशक्त विचार है जो निरक्षर, सर्वहारा जनता की सुप्तावस्था को जागृत करना चाहता हैं, एवं मध्यमवर्गीय पालतू समाज व्यवस्था की अमानवीयता को बदलना चाहता हैं। उनके ये विचार मुक्तिबोध, राजकमल चोधरी, से भी अधिक प्रभावी है।

""मेरे पास उत्तेजित होने के लिए
कुछ भी नहीं है
न कोकशास्त्र की किताब
न युघ्द की बात
न गद्देदार बिस्तर
न टांगे न रात।" **(25)**

वह अकवितावादियों के कुछेक एक उपमान अवश्य लेते थे। परंतु उनके कोरे शारीरिक भोंडे प्रतीकों को खंडीत सिध्द करता हैं। वह सामाजिक व्यभिचारी नीतियों का पर्दाफाश करने के लिए ऐसे उपमान अपनाता हैं।

"कहीं कुछ भी नहीं है सिर्फ
उसका मरना है इस भ्रम के साथ-साथ
जिसे मैंने अपनी कविताओं का गवाह
कर लिया है।" (26)

"राजकमल चौधरी के लिए" जैसी कविताएँ उसके व्यक्तित्व का बडी वस्तुनिष्ठ एवं गहराई से विवेचन की मांग करती हैं। वह उसकी सही सार्थक मान्यताओं से प्रभावी है। ऐसा साहसपूर्ण जीवन जीते हुए वह "ब्रेन टयूमर" का शिकार हो गये। अंतिम सांसे गिनता हुआ यह कवि अपने सृजनात्मक पक्ष एवं **गंभीर** विचारों के प्रति निरंतर सचेत रहा।

"शब्द किस तरह
कविता बनते हैं
इसे देखो
अक्षरों के बीच घिरे हुए
आदमी को पढो
क्या तुमने सुना है कि यह
लोहे की आवाज है या
मिट्टी में गिरे हुए खून
का रंग।" (27)

धूमिल अपने विचारों को सामूहिकता में परिणत कर समग्र राष्ट्र में व्याप्त अंतर्विरोधी नीतियों को समाप्त कर हलचल मचा देना चाहता हैं। -

"मेरी कविता इस तरह अकेले को
सामूहिकता देती हैं और समूह को साहसिकता।" (28)

वह उसकी रचनाधर्मिता की संकल्पित प्रेरक शक्ति हैं। पत्नी का चेहरा ही उसकी कविता की जमीन है। मूलतः यदि वह गाँव से महानगरों की ओर प्रस्थान न करता तो शायद उसे षड्यंत्रकारी शोषक संस्कृति के घृणित व्यावसायिक वृत्तियों का इतना गहरा परिचय न मिलता और न ही वह इतना प्रतिबध्द कवि होता।

धूमिल कलकत्ता में "मेसर्स तलवार ब्रदर्स प्राईवेट लिमिटेड" में पासिंग अफसर के पद पर नियुक्त हो जाते हैं। उन्होंने वहाँ महानगरीय बोध की अमानवीय स्थितियों को करीब से देखा।

राजशेखर के शब्दानुसार :-

"उन्होंने अपनी खुली आँखो से यह देखा की, मेहनतकश जनता और पूंजीपति मुर्दाफरोशों के बीच कितनी दूरी है। मजदूरों के साथ धन अणित व्यवहार को देखकर उसने महसूस किया कि पिरामिडों के शिखरों का संपूर्ण शिलालेख गुलाम मजदूरों ने अपने आँसूओं और खून से लिखा है।"

धूमिल महानगरीय संस्कृति में परिव्याप्त वर्ग वैषम्य की परिस्थितियों तथा कुत्सित व्यापारों के विरुध्द अपनी प्रतिक्रियात्मक लेखनी की क्रियान्वीती को सार्थकता के धरातल पर निभाता रहा। यहीं से उसकी सामाजिक प्रतिबध्दता निरंत निखरती गई।

"यद्यपि यह सही है कि, मै
कोई ठंडा आदमी नहीं हूँ
मुझमें भी आग है
मगर वह
भभक कर बाहर नहीं आती
क्योंकि उसकेचारों तरफ चक्कर काटता हुआ
एक पूंजीवादी दिमाग है।" (29)

धूमिल का जनवादी चिंतक निरंतर पूंजीपतियों के अमानवीय व्यवहारों के विरुध्द संघर्षरत रहा। उसकी आग, आक्रोश भीतर ही भीतर सुलगती रही। वह निरंतर नौकरी दौरान नारकीय स्थितियों के विरुध्द लिखता रहा।

"सचमुच मजबूरी है
मगर जिंदा रहने के लिए
पालतू होना जरुरी है।" (30)

धूमिल जैसा व्यक्तित्व पूँजीपतियों के मक्कारियत हथकंडों के समक्ष कभी भी नसमस्तक न हुआ। वह अपनी भीतरी पीडा, वैचारिकता को उद्‌दाम रुप देता रहा। ऐसी स्थिति में यह प्रश्न उठता हैं कि, क्या नौकरी को लात मारकर उसका आत्म-सम्मानपूर्ण व्यक्तित्व, परिवार एवं समाज में सुरक्षित रह पाएगा। इन परिस्थितियों में वह आत्म-सम्मान से जूझता हुआ लोहा ढोने का कार्य करता हैं। वह उसकी नौकरी त्याग सकता है आत्मसम्मान नहीं।

"दुख होता हैं अगर किसी को
मिली नौकरी छूट गई हो
लेकिन उतना नहीं की जितना
बार-बार सुनने पर भी फटाकर
आदमी लौट-काम पर
फिर आया हो
कालर फटी कमीज पहनकर।" (31)

धूमिल का विवाह बारह वर्ष की आयु में ही संपन्न हुआ। इसके मूल में हमारी गांवों की रुढीगत जर्जरित संस्कृति बालविवाह का परिचय मिलता हैं। बाल-विवाह ने धूमिल को पारिवारिक उत्तरदायित्वों को निभाने हेतु बाध्य किया।

यही हमारे समाज के अंतर्विरोधी बिंदु हैं जिन्होंने कवि की संकल्पित चेतना एवं संवेदनशीलता को व्यापक बनाया। कवि ने स्वयं निजी जिंदगी की वास्तविकता को यथार्थ के धरातलपर व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति दी है।

"मैं छोटी-छोटी सुविधाओं के मोर्चेपर
मारा गया
कुल एक का बटा सात
ब्याह के दिन मारा गया
मेरी सुहागरात
उस सितारे की चीख थी
जो सागर में चमकी और बिना किसी
भाषा के बुझ गई
शेष का एक बटा सात
दप्तरों की फाइलों में तलाश के।" (32)

रचयिता की उपर्युक्त पंक्तियाँ निजी जीवन के कटु सत्यों की साक्षात प्रस्तुति करती हैं। वह कैसे अल्पायु में पारिवारिक दायित्वों के प्रति संलग्न हुआ। उसकी संवेदनशीता सृजनात्मक दायित्व एवं पारिवारिक दायित्व कैसे एक साथ रहें। वह सितारा जिसे अभी चमकना था वह एकाएक धूमिल हो गया।

वास्तव में देखा जाय तो यह स्थिति धूमिल की ही नहीं, अपितु निम्न वर्ग एवं मध्यवर्ग के लोगों की भी हो सकती हैं। यही वह स्थिति हैं जो संवेदनशील व्यक्ति की चेतना को तराशती हैं। वह बर्बाद अवश्य हो जाता हैं परंतु वह बर्बादी को भी सहर्ष स्वीकार कर चलता हैं। परंतु पारिवारिक दायित्व पूर्ण का रुप से निर्वाह न कर पाने के कारण वह चिंतित भी होता हैं। बसंत बिलों के भुगतान का मौसम हो तो व्यक्ति के जीवन का बसंत पतझड में परिवर्तित होना सहज स्वाभाविक तो हैं ही।

"लिखो बसंत
ठीक बस-अंत लिखो
तब लिखो बसंत
पेड पर नहीं पर
चेहरे पर लिखो।" (33)

वह जीवन में अर्थ के धरातलपर अभावग्रस्त होकर भी अपनी पत्नी से सही संबंध स्थापित किए है सही उसकी पृथक पहचान है।

"तुम्हारी अंगुलियां जैसे कविता की
गतिशील पंक्तियाँ है
तुम्हारा चेहरा जैसे
कविता की
जमीन है
तुम एक सुंदर और सार्थक
कविता हो मेरे लिए।" (34)

धूमिल का लक्ष पंक्तियों में रोमानियत पूर्ण संदर्भो को रेखांकित करना नहीं है अपितु सही सार्थक जीवनयापन एवं स्नेहिल संबंधों का आदर्श प्रस्तुत करना है।

"वह धूमिल नहीं
एक डरा हुआ हिंदू है
उसकी बीबी है
बच्चें है
घर है
अपने हिस्से का देश है
ईश्वर की दी हुई गरीबी है
और सही शब्द चुनने का डर है।" (35)

धूमिल ने एक पारिवारिक दायित्व में घिरे व्यक्ति की वास्तविकता को बडे ही यथार्थ परक ढंग से रेखांकित किया है। एक ओर बीबी बच्चे और तो दूसरी ओर तिरस्कृत निम्न, मध्य वर्ग के व्यक्ति हैं यदि ऐसा व्यक्ति परिवार के संचालन हेतु गरीबी को समाप्त करने के लिए वास्तव पर पर्दा डालता हैं तो उसका कवि कर्म मात्र नारेबाजी का शिकार होता हैं।

"सही शब्द चुनने का डर" इसीलिए है क्योंकि यदि वह व्यक्ति क्रांतिधर्मी बनता है, तो उसके बीबी बच्चों की दयनीय स्थितियाँ उसे निरंतर सालती हैं। परंतु धूमिल जैसा प्रखर व्यक्तित्व अपने दोहरे उत्तरदायित्वों के प्रति सदैव सचेत हैं।

"ईश्वर की दी हुई गरीबी" में रचयिता ने बडे ही संश्लिष्टात्मक धरातलपर व्यक्ति की पराजित मनस्थितियोंपर व्यंग्य कैसा है। वह आत्मसंघर्ष से जन संघर्ष तक की जिवंत विकास यात्रा तय करता हैं। वह समाज की अमानवीय

परिस्थितियों के विरुध्द लडता हैं। वह बच्चे को रोते देखकर अपने भीतर ही भीतर संघर्ष करता रहता हैं और प्रश्न करता हैं। ऐसी स्थितियों में उसका सृजनात्मक चिंतक और अधिक प्रखर संवेदनशील होता हैं। क्योंकि यह स्थितियाँ हमारे समाज में परिव्याप्त तिरस्कृत शोषित व्यक्ति एवं निम्न मध्य वर्ग के व्यक्ति के परिवार की है। -

"बच्चा क्यो रो रहा है?
मैं चुपचाप उठकर रसोई में जाता हूँ
और पूछता हूँ क्या हो रहा है।" (36)

धूमिल भावी भविष्य के निर्माताओं को रोता नहीं देख सकता। इसलिए वह व्यवस्था से कदापि समझौता नहीं कर सकता। वह घर में बीमार बच्चे का फटे से दूध का रोना सुनता हैं। ऐसी स्थितियों में उसका चिंतन अधिक प्रखर होता हैं।

धूमिल की व्यापक दृष्टि समाज के प्रत्येक तिरस्कृत उपेक्षित बच्चे को अपना बच्चा समझता हैं। रचयिता की दृष्टि से जब समस्त बच्चे प्रफुल्लित होंगे तभी भावी भविष्य का शक्तिशाली निर्माण संभव है। वह ऐसी विघटनकारी स्थितियों को समाप्त करना चाहता हैं। वह परिवार की वास्तविकता से परिचित थे।

"बच्चे भूखे है
माँ के चेहरे पत्थर
पिता जैसे काठः अपनी ही आग में
जले है ज्यों सारा घर (37)

धूमिल की आत्म-सजगता वास्तविकता से सर्वथा परिचित हैं। हमें यहां भी इन्हीं तथ्यों को रेखांकित करना है कि इन कविताओं में धूमिल अवश्य निजी पारिवारिक समस्याओं की चर्चा करता हैं।

******* 0 *******

***** अध्याय नं.2 *****

1. संसद से सडक तक – धूमिल – मुनासिब कार्रवाई पृष्ठ 86
2. संसद से सडक तक – धूमिल – मुनासिब कार्रवाई पृष्ठ 85
3. संसद से सडक तक – धूमिल – कविता पृष्ठ8
4. संसद से सडक तक – धूमिल – मोचीराम पृष्ठ 37
5. संसद से सडक तक – धूमिल – नक्सलबाडी पृष्ठ 66, 68
6. संसद से सडक तक – धूमिल – कवि 1970 पृष्ठ 65
7. कल सुनना मुझे – धूमिल – शब्द जहॉं सक्रीय है पृष्ठ 37
8. कल सुनना मुझे – धूमिल – शब्द जहॉं सक्रीय है पृष्ठ 37
9. कल सुनना मुझे – धूमिल – शब्द जहॉं सक्रीय है पृष्ठ 39
10. संसद से सडक तक – धूमिल – मुनासिब कार्रवाई पृष्ठ85
11. संसद से सडक तक – धूमिल – मुनासिब कार्रवाई पृष्ठ85
12. संसद से सडक तक – धूमिल – मुनासिब कार्रवाई पृष्ठ 85
13. कल सुनना मुझे – धूमिल – कविता के द्वारा हस्तक्षेप पृष्ठ 66
14. जल गई बांसुरी – धूमिल – अप्राप्य
15. संसद से सडक तक – धूमिल – बीस साल बाद पृष्ठ 10
16. संसद से सडक तक – धूमिल – कविता 1970 पृष्ठ 62
17. संसद से सडक तक – धूमिल – पटकथा पृष्ठ 117
18. संसद से सडक तक – धूमिल – पटकथा पृष्ठ 113
19. संसद से सडक तक – धूमिल – उस औरत की बगल में लेटकर पृष्ठ 28
20. संसद से सडक तक – धूमिल – पटकथा पृष्ठ 121
21. सुदामा पांडे का प्रजातंत्र – धूमिल – मैं सहज होना चाहता हूँ पृष्ठ 47
22. सुदामा पांडे का प्रजातंत्र – धूमिल – नींद के बाद पृष्ठ79
23. कल सुनना मुझे – धूमिल – गॉंव में कीर्तन पृष्ठ 76
24. संसद से सडक तक – धूमिल – प्रौढ शिक्षा पृष्ठ46
25. संसद से सडक तक – धूमिल – एकांत कथा पृष्ठ 22
26. संसद से सडक तक – धूमिल – राजकमल चौधरी के लिए पृष्ठ 29
27. कल सुनना मुझे – धूमिल – धूमिल की अंतिम कविता पृष्ठ 80
28. कल सुनना मुझे – धूमिल – कविता के द्वारा हस्तक्षेप पृष्ठ 66

29. संसद से सडक तक – धूमिल – पटकथा पृष्ठ 115

30. संसद से सडक तक – धूमिल – शहर का व्याकरण पृष्ठ 57

31. कल सुनना मुझे – धूमिल – सापेक्ष्य संवेदन पृष्ठ 52

32. सुदामा पांडे का प्रजातंत्र – धूमिल – सात – प्यार पृष्ठ 90

33. सुदामा पांडे का प्रजातंत्र – धूमिल – प्रस्ताव पृष्ठ 83

34. सुदामा पांडे का प्रजातंत्र – धूमिल – दोः पत्नी के लिए पृष्ठ 86

35. संसद से सडक तक – धूमिल – कवि 1970 पृष्ठ 63

36. संसद से सडक तक – धूमिल – कवि 1970 पृष्ठ 64

37. कल सुनना मुझे – धूमिल – आज मैं लड रहा हूँ पृष्ठ68